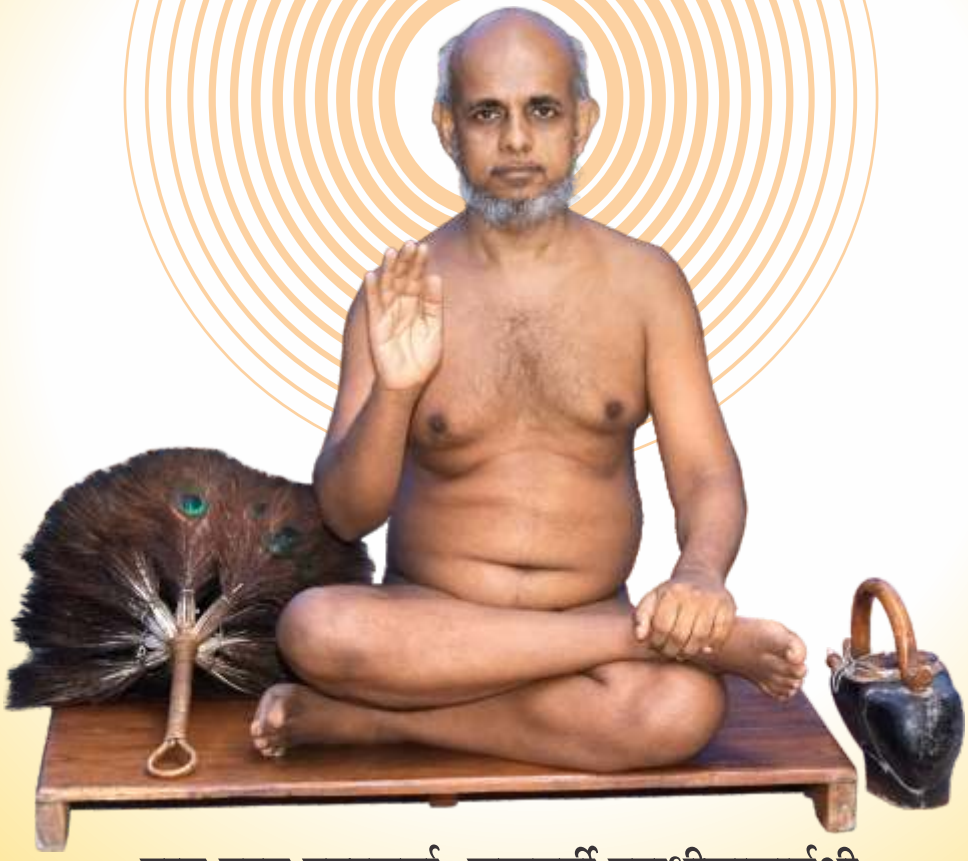

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद शिखर जी विधान

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान :

विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

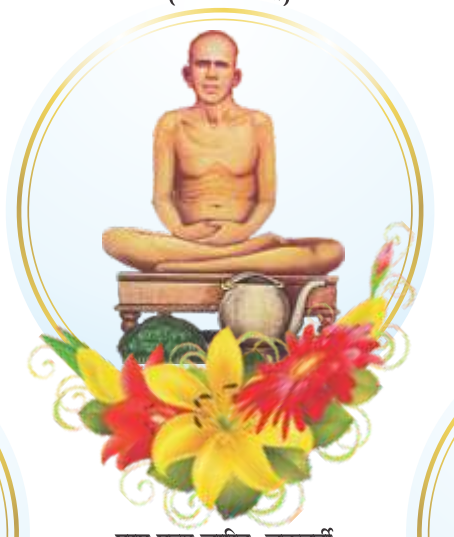

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

आराधना के पुष्प

''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' जिस प्रकार एक दीपक में प्रकाशित ज्योति घोर अन्धकार को दूर करने में समर्थ होती है उसी तरह पर्वतराज सम्मेद शिखर में बसे पावन तीर्थ की भक्ति से अनन्तानन्त पतितों ने अपने जीवन को पावन बनाया है।

यह त्रिकालवर्ती पर्वतराज सम्मेद शिखर जहाँ से भव्यों ने मोक्ष एवं निर्वाण पद को प्राप्त किया है जिसकी माटी ही इतनी पवित्र है कि लोगों के जीवन में होने वाले असंख्यात दुःखों को क्षण में दूर कर देती है।

ऐसी स्वर्णिम छटा में बिखरे तीर्थ कूटों का भक्तिमय वर्णन **परम पूज्य गुरुदेव क्षमामूर्ति ''साहित्य रत्नाकर'' आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** ने अपनी सरल एवं सुबोध शब्द शैली के द्वारा किया है। परम पूज्य आचार्य श्री के द्वारा अभी तक कई ग्रन्थों का जैसे द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश, रत्नकरण्डकश्रावकाचार सुभाषित रत्नावली आदि का हिन्दी पद्यानुवाद किया गया है। तथा भव्यों को भगवान की भक्ति के सहारे का आलम्बन देते हुए आचार्य श्री ने विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान, भगवान आदिनाथ श्री स्तुति हेतु भक्तामर विधान, पद्मप्रभ, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त, वासुपूज्य, शान्तिनाथ, मुनिसुव्रत, नेमिनाथ, महावीर विधान, नवदेवता तत्त्वार्थ सूत्र विधान आदि के माध्यम से हमें साक्षात् प्रभु के दर्शन एवं गुणगान का सुअवसर प्रदान किया है। इसी क्रम में यह श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र सम्मेद शिखर विधान की रचना की। पूज्य आचार्य श्री के द्वारा रचित विशद नवग्रह शान्ति विधान में जो शब्द पुष्प संकलित हुए हैं उसके माध्यम से अनेक भव्यों ने प्रभु के गुणों का साक्षात्कार कर अपनी ग्रह पीड़ा सम्बन्धी बाधाओं को दूर किया है। क्योंकि कहा भी गया है –

जब कोई नहीं आता, मेरे गुरुवर आते हैं।
मेरे दुख के दिनों में, वो बड़े काम आते हैं।।

परम पूज्य आचार्य श्री स्वयं धर्म की गंगोत्री हैं। उनके काव्य, गद्य एवं पद्य के माध्यम से संकलित शब्दों की सरिता में विभोर हो असंख्यातों भव्य भक्ति गंगा में अवगाहन कर असीमित पुण्य का संचय करते हैं।

प.पू.आचार्य श्री ने जो शब्द संकलन के द्वारा हमें प्रभु के गुणगान का सहारा दिया है। उसके लिए हम उनके सदा ऋणी रहेंगे, पूज्य गुरुदेव इसी तरह भक्ति का सहारा देकर हमें भी अपने समान बना लें, इसी भावना के साथ पू.आ. श्री के चरणों में शत् शत् कोटि नमोऽस्तु

श्रद्धान जिनपे रखकर, सम्यक्त्व को यूँ पाया।
चारित्र धारकर के, सद् मोक्ष जिनने पाया।।
कण, कण जहाँ के पावन, गुलशन में खिल रहे हैं।
पर्वत शिखर पे जाके, पारस जी बस गए हैं।।
जीवन में इनकी भक्ति, विशद भाव से जो करते।
सद् राह पे वो चलकर, शुभ मोक्ष पद को वरते।।

*** * ***

नई अक्सीर ला करके नया तू ज्ञान पैदा कर।
तुझे तेरा नजर आए, तू ऐसा ध्यान पैदा कर।।
नया अरमान कर पैदा, सुपुर्दे खाक से पहिले।
कि अपने खाक के पुतले, में तू भगवान पैदा कर।।

ब्र. ज्योति दीदी
संघस्थ आचार्य विशद सागर जी महाराज

अभिषेक पाठ

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय, करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा नमः पवित्रतर जलेन सर्वांग शुद्धि करोमि इति स्वाहा।

श्री मज्जिनेन्द्र-मभि-वन्द्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद् वाद-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम।।
श्री मूल संघ सुदृशां सुकृतैकहेतर्ः।
जिनेन्द्र - यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यहाँ पर सभी पात्र आभूषण, कंकण, माला, अंगुठी, हार, मुकुट धारण करें।

श्री मन मंदर सुंदरे शुचि जलै धौतैः सदर्भाक्षतेः।
पीठे मुक्ति वरम निधाय रचितम त्वत् पाद पद्मस्रजः।।
इंद्रोऽहं निज-भूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे।
मुद्रा कङ्कण शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीतं धारयामि। मम् गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

आभूषण पहनने का मंत्र

सौगंध संगत मधुव्रतझङ्कृतेन।
संवर्ण्य मान मिव गंध मनिन्द्य मादौ।।
आरोपयामि विबुधेश्वर वृन्द वन्द्य।
पादारविन्द मभिवन्द्य जिनोत्तमानाम।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुनलेपनं करोमि।

भूमि शुद्धि मंत्र

ये संति केचिदिह दिव्य कुल प्रसूता।
नागाः प्रभूत बल दर्प युता विबोधाः।।
सरंक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषाम्।
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पीठ प्रक्षालन मंत्र

क्षीरार्ण वस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः।
प्रक्षालितं सुर वरैर्यदनेक वारम्।।
अत्युद्यमुद्यतमहं जिनपादपीठं।
प्रक्षालयामि भव संभव भव तापहारि।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि इति स्वाहा।

श्रीकार लेखन मंत्र

श्री शारदा सुमुख निर्गत बीज वर्णम।
श्री मङ्गलीक वरसर्व जनस्य नित्यम्।।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश विघ्नं।
श्रीकार वर्ण लिखितं जिन भद्रपीठे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि इति स्वाहा। (यहाँ पर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्रीजी को विराजमान करने का मंत्र

यं पाण्डुकामल शिलागतमादिदेव।
मस्नापयन् सुरवराः सुर शैल मूर्ध्नि।।
कल्याण मीप्सुरहमक्षत तोय पुष्पैः।
संभावयामि पुर एव तदीय विम्बम।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह पाण्डुक शिलापीठे स्थापनम् इति करोमि।

कलश स्थापना मंत्र

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरौप्य।
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान्।।
सवांह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्।
संस्थापयामि कलशाञ्जिन वेदिकान्ते।।

ॐ ह्रीं चतुष्कोणेषु चतुकलश स्थापनं करोमि इति स्वाहा ।

(नीचे लिखे मन्त्र को बोलते हुए चारों कोनों पर स्थापित कलशों में जलधारा छोड़ें। पश्चात् पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवे श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिंच्छे केशरी-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा-सिंधु-रोहित-रोहितास्या-हरित्-हरिकांता सीता-सीतोदा-नारी-नरकांता सुवर्णकूला-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-क्षीराम्भोनिधि शुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षिप्तं नवरत्न-गन्ध पुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु-कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं असि आ उ सा नमः स्वाहा।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जल से अभिषेक करें।)

जलाभिषेक

दूरावनम्र-सुरनाथ-किरीट-कोटी।
संलग्न-रत्न किरणच्छवि धूसराङ्घ्रिम्।।
प्रस्वेद ताप मल मुक्तिमपि प्रकृष्टैर्।
भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे ।।

(1) ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिवर्धमानपर्यन्तं-चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते... नाम्नि नगरे... जिन चैत्यालय मध्ये अद्य वीर निर्वाण सं... मासोत्तम मासे... पक्षे... तिथौ... वासरे पौर्णाह्निक/माध्याह्निक/अपराह्निक समये मुनि-आर्यिका-श्रावक श्राविकाणां सकल कर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नमः स्वाहा।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं

इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में प्रभु अब तक गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को जलधारा देने आए हैं।।

नोट – उपर्युक्त दोनों मंत्रों में से एक मंत्र बोलना चाहिये।

अर्घ ह्लह्ल **उदक चन्दन तंदुल ..... महं यजे।।**

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णलशैर्निखिलावसानम्।
संसारसागरविलंघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्र।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर चतुः कोणकुंभकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

अर्घ ह्लह्ल **उदक चन्दन तंदुल ..... महं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री त्रिभुवनपते चतुः कलशेन धारा करोमि नमोऽर्हते अर्घ नि. स्वाहा।

द्रव्यैरनल्पघनसार चतुः समाढ्यैः रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः।
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

अज्ञान महातम के करण हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घ ह्लह्ल **उदक चन्दन तंदुल ..... महंयते।।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री त्रिभुवनपते पूर्णसुगंधितकलशेन धारा करोमि नमोऽर्हते अर्घ निर्वपामिति स्वाहा।

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वंशकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुरसंघोपसर्ग विनाशाय, घाति कर्म विनाशाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्म चक्र भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुखं हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

शिव मस्तु। कुल–गौत्र–धन–धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य–मल्लि–वर्धमान पुष्पदंत–शीतल मुनिसुव्रत नेमिनाथ–पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रह शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्तये नमः। श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरक्रत क्षुद्रउपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य तथैव मम् (नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

सपूंजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र साम्राज्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैः चरुसुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गानरवाकुले जिन ग्रहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन पते शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ।)

निर्मलं निर्मली करणं पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वन्दे कर्माष्टकं निवारणम्।।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनंत चतुष्टय के धनी तुम ही हो सरताज।
मुक्ति वधु के कंत तुम तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन भवदधि-शोषण हार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिव सुख के करतार।।3।।

हरता अघ अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो धरता निज गुण रास।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सों ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं बन्दों जिन देव को करि अति निरमल भाव।
कर्म बंध के छेदने और न कछू उपाय।।6।।

भविजन को भव कूप तें तुम ही काढ़न हार।
दीन दयाल अनाथ पति आतम गुण भंडार।।7।।

चिदानंद निर्मल कियो धोय कर्म रज मेल।
सरल करी या जगत् में भविजन को शिवगेल।।8।।

तुम पद पंकज पूजतैं विघ्न रोग टरजाए।
शत्रु मित्रता को धरें विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खगधर इंद्र पद मिलें आप तें आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहें नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किए गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी जय-जय-जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधि विषें तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु जय-जय-जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रूल्यो मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै मेटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजें सुरपति अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार।
मैं डूबत भव-सिंधु में खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकै कीजे आप समान।।18।।

तुम्हरी नेक सुदृष्टि तें जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों नेक निहार निकार।।19।।

जो मैं कहहूँ और सों तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसों बनी तातें करौं पुकार।।20।।

बंदों पाँचों परम गुरु सुर गुरु वंदत जास।
विघ्नहरण मंगल करण पूरण परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमों नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधुनमि रचो पाठ सुखदाय।।22।।

अथ अर्हत् पूजा प्रतिज्ञायां ..... ।।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

कायोत्सर्गं करोमि

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपामि।

चत्तारि मंगलम् अरिहंता मंगलम् सिद्धा मंगलम् साहू मंगलम् केवलि पण्णतो धम्मो मंगलम्। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि अरिहंते शरणं पव्वज्जामि। सिद्धे शरणं पव्वज्जामि साहू शरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (परि पुष्पांजलि क्षिपामि)।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा।
ध्यायेत पंच नमस्कारं सर्व पापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाम् गतोऽपिवा।
यः स्मरेत परमात्मानम् सःबाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्रोयम्-सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमम् मंगलं मताः।।3।।

एसो पंच-णमो-यारो सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं।।4।।

अर्ह-मित्यक्षरम ब्रह्म-बाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद् बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतम् सिद्ध चक्रम् नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यांति-शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरः।।7।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनकल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हन्त सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिननाममहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवन जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन-तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित तत्वार्थ सूत्र दशोध्याय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

भक्तामरः-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिने-पाद युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम्।।1।।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणै-र्निबद्धां।
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं।
तं मानतुंङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः।। 2।।

ॐ ह्रीं मानतुंगाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्र काव्यम् अर्घम् निर्वपामीति स्वाहाः।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्री मज्जिनेन्द्र – मभिवंध – जगत्त्रयेशं।
स्याद् वाद नायक–मनंत–चतुष्ट–यार्हम्।।
श्री मूल–संघ–सुदृसाम सुकृतैक–हेतुः।
जैनेंद्र–यज्ञ–विधिरेषु मयाभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोक–गुरुवे जिन–पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय।।
स्वस्ति प्रकाश–सह–जोर्जित दृंङ्मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न ललिताद–भुत वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छलद्–विमल बोध सुधा–प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव–परभाव–विभास–काय।।
स्वस्ति त्रिलोक–विततैक–चिदुद्–गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल–सकलायत–विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धि – मधि – गम्ययथानु रूपं।
भावस्य शुद्धि – मधिकामधि गंतु कामः।
आलंबनानि विविधान्यवलम्व्य बल्गन्?
भूतार्थ – यज्ञ – पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।

अर्हंत पुराण – पुरुषोत्तम् – पावनानि।
वस्तून्यून्यूनमखिलान्ययमेक एव।।
अस्मिन् – ज्वलद् विमल – केवल बोध वह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिन प्रतिमाऽग्रे परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्री पद्मप्रभुः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्री चंद्रप्रभुः।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांशः स्वस्ति स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति स्वस्ति श्री अनंतः।
श्री धर्मः स्वस्ति स्वस्ति श्री शांतिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानम्

(।। परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।।)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

नित्या–प्रकंपाद–भुत केवलौघाः। स्फुरन मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।।
दिव्यावधिज्ञान बलप्रबोधाः। स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें।)

कोष्ठस्थ–धान्योपममेक–बीजम्। सभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धि–बलं दधाना। स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरात्। आस्वादन घ्राण विलोकनानि।।
दिव्यान–मतिज्ञान बलाद्बहंत:। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन:।।3।।

प्रज्ञा प्रधाना: श्रमणा: समृद्धा:। प्रत्येक बुद्धा: दश सर्व पूर्वै:।।
प्रवादिनोष्टांग निमित्त विज्ञा:। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन: ।।4 ।।

जङ्घा वलि श्रेणि–फलाम्बु तन्तु। प्रसून वीजांकुर चारणाह्वा: ।।
नमोऽगण स्वैर विहारिणश्च। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन: ।।5 ।।

अणिम्नि दक्षा: कुशला महिम्नि। लघिम्नि शक्ता: कृतिनो गरिम्णि।।
मनो वपु: वाग्वलिनश्च नित्यम्। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन: ।।6 ।।

सकाम–रूपित्व–वशित्व मैश्यम्। प्राकाम्य मन्तर्धिमथाप्तिमाप्ता: ।।
तथाऽप्रतीधात गुण प्रधाना:। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन: ।।7 ।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं। घोरं तपो घोर पराक्रमस्था: ।।
ब्रह्मा परम घोर गुणाश्चरंत:। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन: ।।8 ।।

आमर्ष सर्वोषधयस्तथाशी। विषंविषा दृष्टि विषं विषाश्च।।
सखिल्लविऽजल्लमलौषधीशा:। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन:।।9।।

क्षीरं स्त्रवंतोऽत्रघृतम स्रवन्तो। मधु स्रवन्तोप्य–मृतम् स्त्रवन्त: ।।
अक्षीण संवास महानसाश्च। स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयोन: ।।10 ।।

।। परमार्षि स्वस्ति मंगल विधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

हम इंसान हैं शैतान को इंसान बनायेंगे, हम इंसान हैं इंसान को इंसान बनायेंगे।
हम पथिक हैं मोक्ष मार्ग के बंधु, हम इंसान से इंसान को भगवान बनायेंगे।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री पार्श्वनाथ पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे तीन लोक के नाथ प्रभो ! जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं बैसाख कृष्णा द्वितीया गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशी, कृष्ण की निशी काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर बाद्य बजारक, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक ...।।2।।

ॐ ह्रीं पौष बदी एकादशी जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशी व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया,
भा बारह भावन अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक ...।।3।।

ॐ ह्रीं पौष बदी एकादशी तपकल्याणक प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहिक्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक ...।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक ...।।5।।

ॐ ह्रीं सावन सुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल।।1।।

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नात्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा

भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर विधान

स्तवन

सोरठा – सम्मेदाचल धाम, शाश्वत तीरथराज है।
बारंबार प्रणाम, मंगलकारी जगत् में ।।

श्री सम्मेद शिखर मंगलमय, शाश्वत तीर्थराज पावन।
भव्य जनों को मोक्ष प्रदायक, तीन लोक में मन भावन।।
जो त्रिकाल तीर्थंकर जिन का, मुनियों का है मुक्तिधाम।
उन सिद्धों के पद पंकज अरु, सिद्ध क्षेत्र को विशद प्रणाम।।1।।

काल अनादि अरु अनंत है, कोई न सृष्टी का कर्त्ता।
जीव रहा चैतन्य स्वरूपी, सर्व लोक सुख दुःख भर्त्ता।।
रत्नत्रय को पाने वाला, जीव जगत् मंगलकारी।
संयम पथ पर बढ़ने वाला, मोक्ष मार्ग का अधिकारी।।2।।

उज्ज्वल तीर्थ क्षेत्र पावन है, सब तीर्थों में रहा प्रधान।
सरस सुउन्नत है गुणधारी, सुख दायक है अचल महान्।।
अतिशय महिमा कहने वाला, कोई जग में नहीं समर्थ।
लघु शब्दों में महिमा गाना, मेरी चेष्टा का क्या अर्थ।।3।।

भक्ति के उद्रेक हृदय में, मेरे नहीं समाते हैं।
अपनी क्षमता से महिमा हम, भाव सहित कुछ गाते हैं।।
मधुवन का है ताज मनोहर, गगन क्षेत्र जिसका पावन।
ओर छोर न दिखता जिसका, भूमण्डल है सिंहासन।।4।।

क्या राजा ? क्या रंक ? हरी क्या ? चक्रीकाम देव सारे।
इन्द्र और नागेन्द्र सभी मिल, बोलें अनुपम जयकारे।।
तीर्थक्षेत्र के वंदन का शुभ, इन सब ने भी फल पाया।
तीर्थंकर अरु तीर्थ क्षेत्र को, विशद हृदय से जब ध्याया।।5।।

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजन

स्थापना

आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ ऊर्जयन्त गिरि अरु, महावीर पावापुर ग्राम।।
गिरिसम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
तीर्थंकर निर्वाण भूमियों, को हम झुका रहे हैं शीश।।
तीन लोकवर्ती जीवों से, जो त्रिकाल हैं पूज्य महान्।
विशदभाव से वंदन करके, उर में करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

छंद-शम्भू

जग की माया में फंसकर, कई जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
श्री जिनेन्द्र वाणी का अमृत, ग्रहण नहीं कर पाए हैं।।
जन्म मृत्यु का रोग मिटे हम, अमृत नीर चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता ने चिता बना डाला, हम इससे बहुत सताए हैं।
चिंतन से चिंता क्षय होवे, संताप नशाने आए हैं।।
संसार ताप मिट जाए आज, हम चंदन चरण चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय स्वभाव है आतम का, हम भूल उसे पछताए हैं।
हमने अनादि से पाया न, अब उसको पाने आए हैं।।
अक्षय पद मिल जाए हमें, यह अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, इससे जगती महकाती है।
उस गंध सुगंधी को पाने, जनता सारी ललचाती है।।
हो काम वासना नाश पूर्ण, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन बहुत किया, पर भूख नहीं मिट पाई है।
प्राणी को बहुत सताती है, यह भूख बहुत दुखदायी है।।
मिट जाए क्षुधा का रोग पूर्ण, यह चरुवर सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा छाया है, सद्ज्ञान दीप न जल पाए।
हो जाय नाश मिथ्यातम का, यह दीप जलाकर हम लाए।।
अज्ञान तिमिर का हो विनाश, यह मनहर दीप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की माया से, हम सदा सताते आए हैं।
आठों अंगों को बांध रखा, हम उनसे छूट न पाए हैं।।
हो अष्ट कर्म का नाश शीघ्र, अग्नि में धूप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किए पूर्व में कर्म कई, वह सभी उदय में आते हैं।
फल उनका शुभ या अशुभ सभी, प्राणी इस जग के पाते हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को यह, श्रीफल सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामिति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पूज्य क्षेत्र निर्वाण हैं, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ठ।।
तर्ज – श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय–जय तीर्थ परम पद दाय।।

श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा को गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कर पाय।
महासुख दाय ...।।
यह तीरथ है अतिशयवान, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण।
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय ...।।
आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीष झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय ...।।
प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ, तिनके चरण झुकाऊँ माथ।
मन में यही भावना भाय, वह भी मुक्ति वधु को पाय।।
महासुखदाय ...।।
वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आये, भक्ति करके हर्ष मनाय।।
महासुखदाय ...।।
चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो ! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय।।
महासुखदाय ...।।
ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय।।
महासुखदाय ...।।
शम्भू आदि अन्य मुनीश, सिद्ध बने शिवपुर के ईश।
महिमा जिसकी कही न जाय, सिद्ध सुपद पाए जिनराय।।
महासुखदाय ...।।

पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय।।
महासुखदाय ...।।
महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारंबार।
इस जीवन को सुखी बनाय, अनुक्रम से मुक्ति को पाय।।
महासुखदाय ...।।
पांचों तीर्थक्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर के रहे महान्।
भव्य जीव वंदन को जाय, मन में अतिशय हर्ष मनाय।।
महासुखदाय ...।।
बोल रहे हम जय-जयकार, हम भी पा जावें भव पार।
अंतिम विशद भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय।।
महासुखदाय ...।।
दोहा - पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
अंतिम मुक्ति वास हो, वंदन करूँ त्रियोग।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाऊँ ज्ञान प्रकाश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

रत्नत्रय को प्राप्तकर, तीर्थ बने अनगार।
तीर्थ न होते लोक में, मिट जाता संसार।।

तीर्थ क्षेत्र की वन्दना, और करें गुणगान।
अल्प काल में जीव वह, बनते तीर्थ महान।।

प्रथम वलय:

दोहा - पूजा के शुभ भाव से, भाव सुमन ले हाथ।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करें, झुका चरण में माथ।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अष्टापद (श्री आदिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा - आदिनाथ निर्वाण, अष्टापद से पाए हैं।
काल दोष यह मान, मोक्ष हुआ जो वहाँ से।।
हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर करुणाकर !।
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति ! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर !।।
हे धर्म प्रवर्तक ! आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, प्रभु भाव सहित करते अर्चन।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दस हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणारविंद को मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारंबार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुर (श्री वासुपूज्य भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **पाए पद निर्वाण, चंपापुर से प्रभु जी।**
वासुपूज्य भगवान, कालदोष यह जानिए।।
चम्पापुर नगरी मन भाए, पांचों कल्याणक प्रभु पाए।
बालयति जो प्रथम कहाए, उनकी महिमा कही न जाए।।
महिमा कही न जाय प्रभु की, जो परम मंगल कहे।
उनके गुणों का गान करने, में सफल हम न रहे।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि चंपापुर मंदारगिरी से सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरनार (श्री नेमिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा – **गिरि गिरनार महान्, ऊर्जयन्त भी नाम है।**
पाए पद निर्वाण, काल दोष से नेमि जिन।।
नेमिनाथ के चरण कमल में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के चरण चढ़ाते हैं।।

राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि गिरनार पर्वत से सिद्ध हुए तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारंबार नमस्कार जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुर (श्री महावीर भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा – **पाए पद निर्वाण, पद्म सरोवर से प्रभु।**
महावीर भगवान, काल दोष यह मानिए।।
हे वीर प्रभो ! महावीर प्रभो !, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन् ! यह भाव सुमन कर में लाए।
हे नाथ ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
शुभ अर्घ्य समर्पित करते हैं, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पद्म सरोवर स्थान से छब्बीस मुनिसहित मोक्ष पधारे, सिद्धपद प्राप्तेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर पूजन

स्थापना

हे तीर्थराज ! हे सिद्ध भूमि !, हे मंगलकारी ! मोक्षधाम।
हे भव बाधा हर पुण्य तीर्थ !, हे प्राची के दिनकर ललाम ! ।।
त्रैलोक्य पूज्य त्रैकालिक शुभ, भवि जीवों के पावन आधार।
श्री सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर, की बोलो भाई जय-जयकार।।
आह्वानन् करके अंतर में, जो जिन सिद्धों को ध्याते हैं।
वे सिद्ध क्षेत्र की पूजा कर, यह जीवन सफल बनाते हैं।।

ॐ ह्रीं शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

क्षीर सागर सा समुज्ज्वल, धवल जल लेकर अमल।
शत् इन्द्र करते वंदना शुभ, गीत भी गाते विमल।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
जो जन्म मृत्यु के दुःखों से, मुक्त करता है अहा।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

अगुरु पंकज तुल्य सुरभित, सरस चंदन हाथ ले।
परम उज्ज्वल श्रेष्ठ केसर, अर्चना को साथ ले।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
भव ताप नाशक सर्व दुख से, मुक्त जो करता अहा।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पूर्णिमा की चांदनी सम, पूर्ण अक्षत ले अमल।
रमणीयता वरती उन्हें जो, अर्चना करते विमल।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
शाश्वत सुपद दायक परम है, मुक्त जो करता अहा।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विश्व के कल्याण की, मंगलमयी आराधना।
चित्त को आनंददायी, हो परम पुष्पार्चना।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
काम दाहक सर्व दुःख से, मुक्त जो करता अहा।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यःकाम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

कल्पद्रुप सम फल प्रदात्री, सर्वदा हितकारिणी।
आराधना चउ सरस युत शुभ, भव्य मनसिज हारिणी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
क्षुधा की बाधा विनाशक, मुक्त जो करता अहा।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यःक्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है अलौकिक दिव्य मनहर, दीप की अनुपम प्रभा।
देखकर होती प्रफुल्लित, देव नर पशु की सभा।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोहतम हो नाश क्षण में, मुक्त जो करता अहा।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्पूर चंदन आदि उत्तम, परम आनन्द कारणी।
वाचस्पति सम धूप पावन, विशद प्रतिभा दायिनी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
कर्म को करके तिरोहित, मुक्त जो करता अहा।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

कल्पद्रुप सम फल मनोहर, हैं समर्पित भाव से।
कर रहे आराधना हम, आनंद अतिशय चाव से।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोक्षपद से हो विभूषित, मुक्त जो करता अहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों की विनाशक, द्रव्य आठों ले परम।
विश्व में कल्याणकारी, कल्पद्रुप सम है शुभम्।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
सर्वार्थ सिद्धि का प्रदायक, मुक्त जो करता अहा।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – सब तीर्थों में श्रेष्ठ है, पावन तीरथ राज।
गाते हैं जयमालिका, मिलकर सकल समाज।।

तर्ज – जाने वाले एक संदेशा ...

गिरि सम्मेद शिखर का वंदन, करने को जो भी जाते।
अक्षय पुण्य कमाने वाले, अक्षय पदवी को पाते।।
शाश्वत तीर्थराज है अनुपम, कण–कण जिसका है पावन।
हरे भरे वृक्षों के ऊपर, पुष्प खिले हैं मन भावन।।
दूर–दूर से आशा लेकर, श्रावक वंदन को आते।।
अक्षय पुण्य ... ।।1।।

तीर्थ वंदना करने वाले, किस्मत वाले होते हैं।
भाव सहित वंदन करके शुभ, बीज पुण्य के बोते हैं।।
श्रावक आकर भक्तिभाव से, गीत भक्ति के शुभ गाते ।
अक्षय पुण्य ... ।।2।।

पूर्व भवों के पुण्योदय से, अंतर में श्रद्धा जागे।
वीतराग जिनधर्म सुकुल जिन, भक्ति में भी मन लागे।।
भव्य भक्त भक्ति करने को, भाव पुष्प कर में लाते।
अक्षय पुण्य ... ।।3।।

तीर्थ नाम पर हम सदियों से, धोखे खाते आए हैं।
चतुर्गति में भटके लेकिन, फिर भी समझ न पाए हैं।
पहले समझ न पाते प्राणी, अन्त समय में पछताते ।।
अक्षय पुण्य ... ।।4।।

मन में यह विश्वास हमारा, हम वंदन को जाएँगे।
तीर्थ वंदना करके हम भी, तीर्थ रूप हो जाएँगे।।
सिद्धों के गुण पाने की हम, विशद भावना शुभ भाते।
अक्षय पुण्य ... ।।5।।

छंद – घत्तानंद

जय महिमाधारी, जग हितकारी, सर्व जगत् मंगलकारी।
कण–कण है पावन, अतिमन भावन, भवि जीवों को सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – पूजा करें महान्, शाश्वत तीरथराज की।
होय जगत् कल्याण, सर्व सौख्य मुक्ति मिले।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

द्वितीय वलय:

सोरठा – **मोक्ष गये जिन बीस, शाश्वत तीरथ राज से।**
झुका चरण में शीश, पुष्पाञ्जंलि करते परम।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ज्ञानधर कूट (श्री कुंथुनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कुंथुनाथ भगवान, परम ज्ञानधर कूट से।**
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए संसार से।।

पावन कूट ज्ञानधर भाई, कुंथुनाथ जिन मुक्ति पाई।
अन्य मुनीश्वर ध्यान लगाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।
पाए हैं मुक्तिधाम अनुपम, नहीं जिसका अंत है।
अतिशय मनोहर कूट अनुपम, विशद महिमावंत है।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधर कूटत: श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख छियानवे हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मित्रधर कूट (श्री नमिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **नमिनाथ भगवान, श्रेष्ठ मित्रधर कूट से।**
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए हैं कर्म से।।

नीलकमल लक्षण के धारी, नमिनाथ जिन मंगलकारी।
प्रभु ने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
होकर प्रकाशी ज्ञान के, उपदेश दे सद्ज्ञान का।
मारग बताया आपने, संसार को कल्याण का।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।2।।

ॐ ह्रीं मित्रधर कूटत: श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोडा कोडी एक अरब पैतालीस लाख सात हजार नौ सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक कूट (श्री अरहनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **तीन पदों के साथ, मुक्त हुए संसार से।**
चरण झुकाऊँ माथ, अरहनाथ भगवान को।।

नाटक कूट नाम है भाई, जहँ से प्रभु ने मुक्ति पाई।
हम भी मुक्ति पाने आए, भक्ति भाव से शीश झुकाए।

चरणों झुकाकर शीश हम, प्रभु कर रहे हैं अर्चना।
ले द्रव्य आठों थाल में शुभ, कर रहे हैं वंदना।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम 'विशद' मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।3।।

ॐ ह्रीं नाटक कूटत: श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संवल कूट (श्री मल्लिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **मल्लिनाथ भगवान, अष्ट कर्म को जीतकर।**
पाया पद निर्वाण, शिव नगरी में जा बसे।।

संवलकूट श्रेष्ठ मन भाया, मल्लिनाथ ने ध्यान लगाया।
आठों कर्म नाशकर भाई, अष्ट गुणों की सिद्धि पाई।।
सिद्धि प्रभु ने प्राप्त करके, सिद्ध पद पाया अहा।
अर्हन्त पद के साथ में अब, सिद्ध जिन को भी कहा।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।5।।

ॐ ह्रीं संवल कूटत: श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छियानवे करोड़ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकुल कूट (श्री श्रेयांसनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **श्रेयश पाया श्रेष्ठ, श्री श्रेयांस तीर्थेश ने।**
जिनवर हुए यथेष्ठ, कर्म घातिया नाशकर।।

संकुल कूट बड़ा मनहारी, तीर्थराज ये विस्मयकारी।
मन को आह्लादित कर देवे, दु:खियों के दु:ख जो हर लेवे।।
हरता दुखों को जीव के जो, भाव से वंदन करें।
हो नाश दुख दुर्गति का जो, श्रेष्ठ अभिनंदन करें।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।6।।

ॐ ह्रीं संकुल कूटत: श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पांच सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ कूट (श्री पुष्पदंत भगवान)

श्री हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यह धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसा सुफल अहा।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशदभाव से ध्याते हैं।।

चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।7।।

ॐ ह्रीं सुप्रभ कूटत: श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवै लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहन कूट (श्री पद्मप्रभ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **मोहन कूट प्रसिद्ध, है तीनों ही लोक में।**
हुए जिनेश्वर सिद्ध, पद्मप्रभु जी जहाँ से।।

हे त्याग मूर्ति ! करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !।
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज !, सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ! ।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभु ! हे भूप ! श्री धर के नंदन !।
हम अष्ट द्रव्य से करते हैं प्रभु, भाव सहित उर से अर्चन।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बंधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।

चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।8।।

ॐ ह्रीं मोहन कूटत: श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे करोड़ सतासी लाख तैंतालीस हजार सात सौ नब्बे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर कूट (श्री मुनिसुव्रत भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **मुनिसुव्रत भगवान, मुक्त हुए हैं कर्म से।**
निर्जर कूट महान्, भक्ति करते भाव से।।

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नंदन।।
मुनिव्रतधारी हे भवतारी ! योगीश्वर ! जिनवर वंदन।
हम शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं प्रभु का अर्चन।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
अब चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।।

चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।3।।

ॐ ह्रीं निर्जर कूटत: श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तानवे करोड़ नौ लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा हमारी आन्तरिक पवित्रता के लिए है। इसलिए पूजा के क्षणों में और पूजा के उपरान्त सारे दिन पवित्रता बनी रहे, ऐसी कोशिश हमारी होनी चाहिए। पूजा और अभिषेक जिनत्व के अत्यन्त सामीप्य का एक अवसर है। इसलिए निरन्तर इन्द्रिय और मन को जीतने का प्रयास करना और जिनत्व के समीप पहुंचना हमारा कर्त्तव्य है।

तृतीय वलय:

दोहा – **तीर्थराज को पूजने, भरकर लाए थाल।**
पुष्पाञ्जलि अर्पित विशद, करते हैं नत भाल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ललित कूट (श्री चन्द्रप्रभु भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **ललित कूट है श्रेष्ठ, जिसकी पूजा हम करें।**
पाए धर्म यथेष्ठ, चन्द्रप्रभु जिनदेव जी।।

हे चन्द्रप्रभो ! हे चन्द्रानन !, महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, दु:ख द्वंद फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम, हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक !, हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता !।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपाकर आ जाओ।
हम पूजन करते भाव सहित, मुझको सद्राह दिखा जाओ।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर के ललित कूट से श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र आदि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पांच सौ पन्चानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविंद में मेरा मन–वचन–काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतवर कूट (श्री शीतलनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **शीतलनाथ जिनेन्द्र, मुक्त हुए संसार से।**
आये इन्द्र नरेन्द्र,पूजा करने के लिए।।

विद्युतवर है कूट निराला, अतिशयकारी महिमावाला।
शीतलनाथ हुए त्रिपुरारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
प्रभु हुए मंगलकार जग में, ज्ञान के धारी परम।
हैं विश्व में अनुपम मनोहर, लक्ष्य प्रभु पाए चरम।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।12।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युतवर कूटत: श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अठारह कोड़ा कोड़ी ब्यालीस करोड़ बत्तीस लाख ब्यालीस हजार नौ सौ पांच मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभू कूट (श्री अनंतनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।**
दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का।।

कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।
बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए।
पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।
हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।

चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।13।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभ कूटत: श्री अनंतनाथ जिनेन्द्रादि छियानवे कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट (श्री संभवनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **संभवनाथ जिनेन्द्र, मोक्ष महल में जा बसे।**
आये तब शत् इन्द्र, पूजन करने प्रभु की।।

धवल कूट से मोक्ष पधारे, अपने कर्म नाश कर सारे।
शत् इन्द्रों ने चरणों आकर, भक्ति गान किया है मनहर।।
करके सुभक्तिगान प्रभु की, चरण का वंदन किया।
लेकर मनोहर द्रव्य आठों, भाव से अर्चन किया।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।14।।

ॐ ह्रीं धवल कूटत: श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पांच सौ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद कूट (श्री अभिनंदन नाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **आनंद कूट महान्, अभिनंदन जिनराज की।**
बंदर है पहिचान, अतिशय जिन का है बड़ा।।

श्री जिनेन्द्र का वंदन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का मुझे सहारा।।
मिल जाए हमको नाथ पावन, चरण की अनुपम शरण।
हम भक्ति से करते हैं भगवन्, चरण में शत्–शत् नमन्।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।16।।

ॐ ह्रीं आनंद कूटत: श्री अभिनंदन जिनेन्द्रादि बहत्तर कोड़ा–कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदत्त कूट (श्री धर्मनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कूट सुदत्त महान्, अतिशय कारी तीर्थ पर।**
धर्मनाथ भगवान, मोक्ष गये हैं जहाँ से।।

प्रभु ने धर्म ध्वजा फहराई, अनुक्रम से फिर मुक्ति पाई।
अष्ट कर्म का किया सफाया, केवल ज्ञान की है यह माया।।

माया कही यह ज्ञान की, जिसने जगाया है परम।
वह नाश करके भव दु:खों का, लक्ष्य पाया है चरम।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।17।।

ॐ ह्रीं सुदत्तवर कूटत: श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि उन्तीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पन्चानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल कूट (श्री सुमतिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा - **सुमति नाथ भगवान, कूट सु अविचल से प्रभु।**
पाए मोक्ष महान्, अष्टम भू पर जा बसे।।
इन्द्र देव गण सब मिल आए, सुमतिनाथ को पूज रचाए।
भाव सहित भक्ति की भारी, चरणों झुके सभी नर-नारी।।
झुककर सभी नर-नार प्रभु की, वंदना को भाव से।
शुभ थाल में ले द्रव्य आठों, गीत गाते चाव से।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।18।।

ॐ ह्रीं अविचल कूटत: श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि एक कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ इक्यासी मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंदप्रभु कूट (श्री शांतिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा - **कूट कुन्दप्रभ जान, शांतिनाथ भगवान की।**
मोक्ष गये भगवान, कर्मनाश कर जहाँ से।।
शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में आप विधाता।
प्रभु हैं जन-जन के उपकारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
सारे जहाँ में आप मंगल, कर रहे सद्धर्म से।
पुण्य का संचय करें, प्राणी सभी सत्कर्म से।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।19।।

ॐ ह्रीं कुंदप्रभ कूटत: श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभास कूट (श्री सुपार्श्वनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा - **पावन कूट प्रभास, जिन सुपार्श्व का जानिए।**
पाए मुक्तिवास, योग रोध करके सभी।।

जन्म बनारस नगरी पाया, हरित रंग थी जिनकी काया।
मन में जब वैराग्य समाया, छोड़ चले सब जग की माया।।
माया जगत् में कर्म का, बंधन कराती है अरे।
यह कर्म उसको न बंधे, जो धर्म का पालन करे।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम 'विशद' मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।21।।

ॐ ह्रीं प्रभास कूटत: श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि उन्चास कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट (श्री विमलनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा - **कूट सुवीर महान्, कहते संकुल कूट भी।**
विमलनाथ भगवान, मोक्ष महल में जा बसे।।
विमलनाथ से नाथ नहीं हैं, सर्व लोक में और कहीं हैं।
चरण शरण में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया।।
सौभाग्यशाली वह जहाँ में, प्रभु का वंदन करें।
ले द्रव्य आठों भाव से जिन, चरण का अर्चन करें।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।

चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।22।।

ॐ ह्रीं सुवीर कूटत: श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि सत्तर कोड़ा कोड़ी साठ लाख छह हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धवर कूट (श्री अजितनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा - **कूट सिद्धवर जान, अजितनाथ भगवान का।**
इन्द्र किए गुणगान, पाया था निर्वाण जब।।
अजितनाथ का साथ मिला है, तब से जीवन चमन खिला है।
श्रद्धा का उपवन महका है, संयम से जीवन चहका है।।
चहका है जीवन विशद संयम, के बढ़े हम मार्ग पर।
शुभ जिंदगी की हर घड़ी अरु, सार्थक हो श्वास हर।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।23।।

ॐ ह्रीं सिद्धवर कूटत: श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र कूट (श्री पार्श्वनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कमठ किया उपसर्ग, बैर जानकर पूर्व का।**
पाए जिन अपवर्ग, कर्म नाशकर ध्यान से।।

पावन तीर्थराज है भूपर, गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर।
सबसे ऊँची टोंक रही है, महिमा जिसकी अगम कही है।।
महिमा अगम है जिन प्रभु की, तीर्थ की भी जानिए।
जो दु:खहर्ता सौख्यकर्त्ता, मोक्षदायी मानिए।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।24।।

ॐ ह्रीं स्वर्णभद्र कूटत: श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर सहित पूर्णार्घ

श्री सम्मेदशिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **चौबिस जिन तीर्थेश, के गणधर चौबीस हैं।**
दिए जगत् उपदेश, दिव्यध्वनि झेली प्रभो।।(विशद)

आदिनाथ आदी जिन गाए, वृषभसेन गणधर कहलाए।
अंतिम महावीर को जानो, गणधर गौतम को पहिचानो।।

पहिचानिए गणधर श्री, जिनदेव के संसार में।
अर्पित करूँ हे नाथ ! क्या मैं, आपको उपहार में।।
हम शरण में आए प्रभु मम्, वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर सहित श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम के उद्यान से आदि भिन्न–भिन्न स्थानों से मोक्ष पधारे हैं तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारंबार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नम:।

समुच्चय जयमाला

दोहा – **सम्मेदाचल तीर्थ अरू, तीर्थक्षेत्र निर्वाण।**
जयमाला गाते विशद, जिनकी यहाँ महान।।

कण–कण पावन जिसका सारा, मंगलमय है तीर्थ हमारा।
श्री सम्मेद शिखर है प्यारा, सब मिलकर बोलो जयकारा।।
सब मिल दर्शन करवा जी, भाव से वंदन करवा जी।
यह अनादि है तीर्थ जहाँ पर, मोक्ष गये है बीस जिनेश्वर।
संख्यातीत यहाँ से मुनिवर, मुक्ती पाए कर्म नाशकर।
जन्म मरण से हो छुटकारा, सब मिल ...।।
जो भी वंदन करने जाते, भूत प्रेत उनसे घबड़ाते।
मन वांछित फल प्राणी पाते, उनके सब संकट कट जाते।
अशुभ गति न होय दुबारा, सब मिल ...।।

भव्यों को दर्शन मिलते हैं, जीवन के उपवन खिलते हैं।
भाव सहित वंदन करते हैं, चरणों का अर्चन करते हैं।।
पाप मिटे वंदन के द्वारा, सब मिल ...।।
सुर नर मुनि गणधर भी आते, अपना सद सौभाग्य जगाते।
सिद्ध क्षेत्र पर ध्यान लगाते, सर्व सिद्धियाँ वह पा जाते।।
गूँजे जैन धर्म का नारा, सब मिल ...।।
सिद्ध सुखों के सुर अभिलाषी, जिनकी चिर आकांक्षा प्यासी।
बिखरी छटा जहाँ मनहारी, जीवों को हैं मंगलकारी।।
वातावरण सुखद है सारा, सब मिल ...।।
संयम का सौभाग्य जगाते, मानव सकल व्रतों को पाते।
निज आतम का ध्यान लगाते, श्रावक श्रद्धा ज्ञान जगाते।
भव सागर से हो निस्तारा, सब मिल ...।।
आओ मिलकर सब जन आओ, वंदन करके पुण्य कमाओ।
जिन सिद्धों को हम सब ध्याएँ, हम भी सिद्ध स्वयं बन जाएँ।।
नहीं और है कोई चारा, सब मिल ...।।
इन्द्र देव ने स्वयं उतरकर, चरण उकेरे हैं पर्वत पर।
अतिशयकारी पुण्य कमाया, जिनकी महिमा को दिखलाया।।
महिमा प्रभु की अपरंपारा, सब मिल ...।।
जो यात्री वंदन को आते, त्याग हेतु प्रेरित हो जाते।
पद चिन्हों का वंदन पाते, अपने सारे दोष नशाते।।
मंगलमय जीवन हो सारा, सब मिल ...।।
कल-कल बहता शीतल नाला, अतिशयकारी महिमा वाला।
चारों तरफ रहे हरियाली, वायु चलती है मतवाली।।

भक्त बोलते हैं जयकारा, सब मिल ...।।
सांवलिया पारस की जय हो, सारे कर्मों का भी क्षय हो।
डोली वाले देते नारे, बोल रहे हैं जय-जयकारे।।
गूंज रहा है पर्वत सारा, सब मिल ...।।
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, जैन धर्म परिकर की जय हो।
दुखहारी गिरवर की जय हो, श्री सम्मेद शिखर की जय हो।।
मुक्ति पाना लक्ष्य हमारा, सब मिल ...।।
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चम्पापुर मानो।
नेमिनाथ गिरनार सिधाएं, वीर प्रभु पावापुर गाए।।
मोक्ष महल पाए हैं प्यारा, सब मिल ...।।

छंद-घत्तानंद

है पूज्य हमारा, पर्वत सारा, सम्मेदाचल तीर्थ महा।
कण-कण है पावन अतिमनभावन, हम पूज रहे हैं नाथ अहा।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रज कण पूजें देव नर, भक्तिभाव के साथ।
भव्य भावना से 'विशद', झुका रहे हैं माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

हर गमों को भूलाना है।
मोक्ष की मंजिल को जाना है।।
भक्ति तो हमारा साधन है।
'विशद' आनंद हमें पाना है।।

निर्वाण क्षेत्र की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।।
करूँ आरती ... ।।1।।

भव-भव के दु:ख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
करूँ आरती ... ।।2।।

अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।।
करूँ आरती ... ।।3।।

ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवल कूट पर मल्लिनाथ की।।
करूँ आरती ... ।।4।।

संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर पद्मप्रभु की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की।।
करूँ आरती ... ।।5।।

ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की।।
करूँ आरती ... ।।6।।

कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की।।
करूँ आरती ... ।।7।।

कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुवीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।।
करूँ आरती ... ।।8।।

चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।।
करूँ आरती ... ।।9।।

प्रशस्ति

सर्व लोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
महिमा जिसकी अगम है, कौन करे गुणगान।।1।।
दक्षिण में जिसके रहा, भरत क्षेत्र विख्यात।
छह खण्डों से युक्त है, कर्म भूमि हो ज्ञात।।2।।
सुषमा-सुषमा आदि छह, होते जिसमें काल।
जिसके चौथे काल में, जिनवर होंय त्रिकाल।।3।।
चौबिस तीर्थंकर सदा, क्रमश: होते सिद्ध।
तीर्थक्षेत्र सम्मेद गिरि, जग में रहा प्रसिद्ध।।4।।
वर्तमान अवसर्पिणी, का यह चौथा काल।
बीस जिनेश्वर तीर्थ से, मुक्ति पाए त्रिकाल।।5।।
मेरुदण्ड से इन्द्र ने, चिन्ह उकेरे श्रेष्ठ।
अतिशयकारी लोक में, मंगल बने यथेष्ठ।।6।।
कण-कण पावन तीर्थ का, मुक्ति पाए ऋषीश।
सिद्ध शिला के जो बने, विस्मयकारी ईश।।7।।
भाव वंदना हेतु यह, रचना हुई महान्।
लघु शब्द में किया है, भाव सहित गुणगान।।8।।
पच्चीस सौ चौतीस यह, रहा वीर निर्वाण।
चैत शुक्ल की पञ्चमी, को यह रचा विधान।।9।।
प्रतापनगर का पाँचवा, सेक्टर रहा महान्।
मूलनायक हैं जहाँ पर, महावीर भगवान।।10।।
नवरात्रा के पर्व पर, नवग्रह शांति विधान।
भाव सहित मिलकर किया, सबने सह सम्मान।।11।।
इस अवसर पर पूर्ण कर, लेखन का यह कार्य।
पढ़कर रचना लाभ लें, 'विशद' जगत जन आर्य।।12।।
लघु शब्दों में यह किया, गिरिवर का गुणगान।
भूल चूक को भूलकर, शोध पढ़े धीमान्।।13।।

परम पूज्य 108 आचार्य
श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंसनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैंॐ
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि.स्वाहा।
प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क

पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वाद (पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य (विधान सूची)

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
10. भगवती आराधना, संकलित
11. विशद श्रमणचर्या, संकलित
12. आराध्य अर्चना, संकलित
13. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
14. इष्टोपदेश
15. द्रव्य संग्रह
16. लघु द्रव्य संग्रह
17. समाधि तंत्र
18. सुभाषित रत्नावली
19. जरा सोचो तो
20. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
21. जीवन की मन: स्थितियाँ
22. संस्कार विज्ञान
23. विशद स्तोत्र संग्रह
24. विशद भक्ति पियूष
25. मूक उपदेश
26. विशद मुक्तावली
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
29. श्री नवदेवता विधान
30. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
31. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
32. श्री चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
33. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
34. मंगलदायक श्री नेमिनाथ विधान
35. श्री महावीर विधान
36. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
37. श्री पंचबालयति विधान
38. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
39. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
40. श्री सम्मेदशिखर विधान
41. श्रुत स्कंध विधान
42. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
43. श्री शान्तिनाथ विधान
44. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
45. वाग्ज्योति स्वरुप वासुपूज्य विधान
46. श्री याग मण्डल विधान
47. श्री 1008 जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान